साहित्य अकादेमी द्वारा प्रख्यात पंजाबी लेखक गुरुदयाल सिंह की स्मृति में श्रद्धांजलि सभा संपन्न

पंजाबी साहित्य को विश्व स्तर पर पहचान दिलाई गुरुदयाल सिंह ने

नई दिल्ली 29 अगस्त 2016। साहित्य अकादेमी द्वारा आज प्रख्यात पंजाबी कथाकार गुरुदयाल सिंह की स्मृति में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। ज्ञात हो कि 10 जनवरी 1933 को जन्मे गुरुदयाल सिंह का विगत 16 अगस्त 2016 को निधन हो गया था।

सर्वप्रथम साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने उन्हें श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि वे केवल पंजाब के लेखक ही नहीं बल्कि भारतीय के महत्त्वपूर्ण लेखक थे। उनके द्वारा रचा हुआ साहित्य 'जैसा जिया वैसा लिखा' के कथन को प्रमाणित करता है। वे केवल पंजाबी में ही नहीं बल्कि सभी भारतीय भाषाओं के लोकप्रिय लेखक थे। दिल्ली विश्वविद्यालय के पंजाबी विभाग के डॉ. मनजीत सिंह ने कहा कि उनके उपन्यासों और कहानियों में पंजाब का दर्द है और ये उनकी रचनाओं में बिना किसी नारेबाज़ी के प्रकट होता है। उन्होंने पंजाबी साहित्य को शिखर पर पहुँचाया और उसको मान–सम्मान दिलाया। उनका साहित्य पंजाब का नहीं बल्कि पूरे विश्व की धरोहर है।

कवि मोहनजीत ने कहा कि उन्होंने अपने उपन्यास 'मढ़ी दा दीवा' से इस मिथ को तोड़ा कि दलितों पर दलित ही बेहतर लिख सकते हैं कोई और नहीं। यह उपन्यास पंजाबी साहित्य के लिए एक क्लासिक कृति है और इस कृति ने पंजाबी साहित्य में एक नये युग का सूत्रपात किया।

कवयित्री डॉ. वनिता ने कहा कि उन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से दलित और वंचितों को हीरो बनाया और आंचलिकता को इतनी गहनता से प्रस्तुत किया कि उसका व्यापक प्रभाव पढ़ा। बलवीर सिंह माधोपुरी ने उन्हें ऐसे प्रगतिशील लेखक के रूप में याद किया जो अपनी सादगी और सरलता से हर किसी के लिए उपलब्ध थे। प्रख्यात हिंदी कवि और ज्ञानपीठ के निदेशक लीलाधर मंडलोई ने उनसे हुई अपनी मुलाकातों को याद करते हुए उन्हें बेहद विनम्र और संकोची बताया और कहा कि वे लेखन में तीन चीजों– अतिनाटकीयता, अतिकल्पनाशीलता और कृत्रिम जीवन से हमेशा बचे। वे जिस परिवेश से आए थे अंत तक उसी के बने रहे। उनके साहित्य में पंजाब का दिल धड़कता था। वे मित्रविहीनों के मित्र थे और अपने आप में संपूर्ण युग के प्रतीक थे। साहित्य अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रवैल सिंह ने उन्हें याद करते हुए कहा कि वे भौतिक रूप से हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन बौद्धिक रूप में वे हमेशा हमारे साथ रहेंगे।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ तिवारी ने उनकी आत्मकथा का ज़िक्र करते हुए कहा कि उन्होंने जीवन भर संघर्ष किया और एक छोटे से गाँव से उठकर साहित्य के बड़े फलक पर स्थापित हुए। पंजाब के जिस ग्रामीण इलाके के बारे में उन्होंने लिखा उससे प्रामाणिक जानकारी और सामाजिक इतिहास हम और कहीं नहीं पा सकते। उनके लेखन को जो व्यापक स्वीकृति मिली वह उनके लेखन की सच्चाई ही के कारण थी।

इस अवसर पर पंजाबी अकादेमी के सचिव गुरुभेज सिंह गुराया, भाई वीर सिंह साहित्य सदन के सचिव डॉ. मोहिंदर सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किए। श्रद्धांजलि सभा में गंगाप्रसाद विमल, रणजीत साहा, महेश कटारे, जे.एल. रेड्डी, सूर्यनाथ सिंह आदि हिंदी और पंजाबी के साहित्यकार और लेखक मौजूद थे। सभा के अंत में दो मिनट का मौन रखकर उन्हें श्रद्धांजलि दी गई।

डॉ. गुरुदयाल सिंह को साहित्य अकादेमी पुरस्कार ज्ञानपीठ पुरस्कार सहित अन्य कई महत्त्वपूर्ण पुरस्कारों से सम्मानित किया गया था। हाल ही में साहित्य अकादेमी ने अपने सर्वोच्च सम्मान महत्तर सदस्यता से विभूषित किया था और सम्मान अर्पण समारोह 28 अगस्त 2016 को उनके गाँव जीतो में आयोजित होना था।